प्रशिक्षार्थीयों के प्रेरणास्वरूप शिक्षकों का अध्ययन

धर्मी बी.पटेल
Aasl pŕfesr,
&I mhavIr iv´amidr ¨S3 bI 0f kolej, paDesra

DaR }Nmel ish
magRxR,
iDpa. Aof 0Jyukexn, vI. 0n. 0s. jI. yu, sut

टूंकसार
शिक्षा क्षेत्र में शिक्षक द्वारा दिए जानेवाली प्रेरणा छात्र की शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक एवम् आध्यात्मिक उन्नति की गुरूचावी है। प्रस्तुत अध्ययन अंतर्गत प्रशिक्षार्थीओ के प्रेरणा स्वरूप शिक्षकों की अध्यापन कक्षा, अध्यापन विषयो, जाति आधारित वर्गीकृत करना और उनकी खासियतों की सूचि बनाना उद्देश्य थे। हस्तलिखित अंक में 'मेरे जीवन के प्रेरणास्वरूप शिक्षक' विषय पर प्रशिक्षार्थीओ से निबंध लिखवाया गया था और संख्यात्मक एवम् गुणात्मक विश्लेषण किया गया था। प्रेरणा स्वरूप शिक्षक की अध्यापन कक्षा माध्यमिक और उच्चत्तर माध्यमिक, विनयन प्रवाह के विषयो, पुरूष जाति सविशेष थी। प्रेरणास्वरूप शिक्षक के अध्यापन कार्य से अच्छे परिणाम की प्राप्ति, वर्तन-व्यवहार छात्र के हितकारी, प्रेरित करने के तरिके में सुदश्क प्रदान करना, छात्र की जरूरतो का ख्याल रखना, बक्षिस देना, बाह्य व्यक्तित्व सामान्य और आंतरिक व्यक्तित्व प्रभावशाली था।

१. प्रस्तावना
जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण काल है विद्यार्थीजीवन। विद्यार्थीकाल में अध्ययन मुख्य लक्ष्य है। व्यक्ति के वर्तन में इच्छित परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है अध्ययन। जिसमें लक्ष्य प्राप्ति के लिए विद्यार्थी शिक्षक के प्रत्यक्ष संपर्क में आता है। विद्यार्थीजीवन में छात्र का घडतर कई शिक्षक द्वारा होता है, लेकिन वह सभी याद नही रहता। कुछ शिक्षक छात्र को आजीवन याद रहते है। जो शिक्षक याद रहते है उसका मुख्य कारण है वे छात्र के लिए विशेष होते है। छात्र के जीवन को नई दिशा प्रदान करते है। शिक्षक द्वारा छात्र को दिए जानेवाला मार्गदर्शन, वर्तन-व्यवहार, प्रोत्साहन और प्रेरणा से वे अपने जीवन में प्रगति के पंथ पर आगे बढते है और उच्च शिखर सर कर पाते है। शिक्षक की 'प्रेरणा' का छात्र की शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक एवम् आध्यात्मिक उन्नति में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। प्रेरणा शिक्षा क्षेत्र में सबकुछ प्राप्त करने की गुरूचावी है। मार्शल (शिक्षा मनोविज्ञान, २००८) प्रेरणा के बारे में बताते है,..

"प्रेरणा यह तय करती है कि व्यक्ति कितनी अच्छी तरह से सीख सकती है और कब तक सीख सकती है।" प्रेरणा स्वरूप शिक्षक की प्रेरणा से शिक्षक बनने के मार्ग पर चलना एक मिशाल है। शिक्षक-प्रशिक्षण प्रशिक्षार्थीओ के प्रेरणास्वरूप शिक्षक की तो बात ही निराली होगी। प्रशिक्षार्थीओ के प्रेरणास्वरूप शिक्षक का विस्तृत अभ्यास करना ही इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य था।

२. शोध अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्था के प्रशिक्षार्थीओ के प्रेरणा स्वरूप शिक्षकों का अभ्यास करना इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य है। जिसमें निम्मलिखित मुद्दे ध्यान में रखके प्रेरणास्वरूप शिक्षक का अभ्यास किया गया था।

१. प्रशिक्षार्थी के प्रेरणास्वरूप शिक्षक की अध्यापन कक्षा को वर्गीकृत करना।
२. प्रेरणास्वरूप शिक्षकों के अध्यापन विषयो का अभ्यास करना।
३. प्रेरणास्वरूप शिक्षकों का जाति आधारित विश्लेषण करना।
४. प्रेरणास्वरूप शिक्षकों की खासियतों की सूचि बनाना।

३. परिसीमांकन

प्रस्तुत अभ्यास का परिसीमांकन इस प्रकार है।

१. प्रस्तुत अध्ययन विद्याभारती, गुजरात प्रदेश संलग्न श्री महावीर विद्यामंदिर ट्रस्ट बी.एड्. कालेज, पांडेसरा, सुरत तक ही सीमित था।
२. प्रस्तुत अध्ययन अंतर्गत केवल वर्ष २०१२ के प्रशिक्षार्थीओ के शाला और कालेज के प्रेरणास्वरूप शिक्षकों के संदर्भ मे किया गया था।

४. शोध विधि एवम् अध्ययन पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन अंतर्गत शिक्षक-प्रशिक्षण संस्था के प्रेरणास्वरूप शिक्षकों का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य था। अध्ययन संदर्भ में माहिती प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम प्रधानाचार्य से अनुमति ली। प्रशिक्षार्थी को अध्ययन का तात्पर्य समझाकर लेखनकार्य के लिए प्रेरित किया था। इस तरह से गुणात्मक माहिती प्राप्त की थी। सभी प्रशिक्षार्थीओ से प्राप्त निबंध 'मेरे प्रेरणास्वरूप शिक्षक' का हस्तलिखित अंक तैयार किया गया। इस तरह यह शोध वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि से किया गया था।

५. न्यादर्श

श्री महावीर विद्यामंदिर ट्रस्ट बी.एड्. कालेज, पांडेसरा, सुरत (वर्ष : २०१२) के ८९ प्रशिक्षार्थीओं को अभ्यास अंतर्गत सामेल किया गया था। व्यापविश्व को ही न्यादर्श के रूप में लिया गया था। इसलिए न्यादर्श की पसंदगी का प्रश्न नही है।

६. उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन अंतर्गत प्रशिक्षार्थीओ द्वारा तैयार किया गया हस्तलिखित अंक माहिती प्राप्ति के उपकरण के रूप में लिया गया था। हस्तलिखित अंक में 'मेरे जीवन के प्रेरणास्वरूप शिक्षक' विषय पर प्रशिक्षार्थीओ से निबंध लिखवाया गया था। सभी निबंधो में शिक्षक का नाम, अध्यापनकक्षा, विषय, शिक्षक का विद्यार्थीजीवन में योगदान, जैसे विभिन्न क्षेत्रो का उल्लेख करने की मौखिक सूचना दी गई थी। इन सभी निबंधो को इकट्ठा करने ५ सितम्बर के लिए एक हस्तलिखित अंक तैयार किया गया और विमोचन किया गया था।

७. शोध विश्लेषण

हस्तलिखित अंक में समाविष्ट निबंध का संख्यात्मक प्रतिशत एवम् गुणात्मक विश्लेषण किया गया था।

१) प्रेरणा स्वरूप शिक्षक की अध्यापन कक्षा प्राथमिक कक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की है। कक्षा को प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चत्तर माध्यमिक और उच्च शिक्षा अनुसार संख्यात्मक वर्गीकृत किया गया।

तालीका–१

कक्षा	प्रतिशत (%)
प्राथमिक	८.९९
माध्यमिक	३०.३४
उच्चत्तर माध्यमिक	३१.४६
उच्च शिक्षा	२५.८४
उल्लेख नहि किया	३.३७
जोड	**१००.००**

तालिका–१ से स्पष्ट होता है कि ज्यादातर प्रशिक्षार्थी के प्रेरणामूर्ति शिक्षक माध्यमिक और उच्चत्तर माध्यमिक कक्षा के है।

२) प्रेरणास्वरूप शिक्षकों के अध्यापन विषयो में भाषा, विज्ञान, गणित और वाणिज्य के सभी विषयो का समावेश हो रहा मालूम पडा। निम्नलिखित कोष्टक में विषय अनुसार माहिती उपलब्ध है।

तालिका–२

प्रवाह	विषय	प्रतिशत (%)	कुल प्रतिशत (%)
विनयन	अंग्रेजी	८.९९	
	मनोविज्ञान	७.८७	
	सामाजिक विज्ञान	४.४९	
	गुजराती	११.२४	
	हिन्दी	४.४९	४३.८२
	तर्कशास्त्र	१.१२	
	संस्कृत	१.१२	
	इतिहास	३.३८	
	राजनीतिशास्त्र	१.१२	
वाणिज्य	अर्थशास्त्र	५.६२	
	नामा के मूलतत्त्व	११.२४	१९.११
	आंकडाशास्त्र	२.२५	
विज्ञान	विज्ञान और टेक्नोलोजी	१९.१०	३५.९५
	गणित	१६.८५	
अन्य	एन.सी.सी. इनस्ट्रक्टर	१.१२	१.१२
जोड			**१०० **

कोष्टक से स्पष्ट होता है कि ज्यादातर प्रेरणामूर्ति शिक्षक विनयन (आर्ट्स) प्रवाह के साथ जुडे हुए थे।

३) प्रेरणास्वरूप शिक्षक को पुरूष और स्त्री जाति मुताबित निम्नलिखित विश्लेषण रहा था।

तालिका–३

शिक्षक की जाति	**प्रतिशत (%)**
स्त्री	३८.२०
पुरूष	६१.८०
जोड	**१००.००**

कोष्टक से स्पष्ट होता है कि ज्यादातर प्रेरणामूर्ति शिक्षक पुरूष जाति के थे।

४) 'मेरे जीवन के प्रेरणामूर्ति शिक्षक' निबंध का गुणात्मक विश्लेषण किया गया। जिस विश्लेषण से प्राप्त शिक्षक की खासियतो का मुख्य चार विभाग में बांटा गया था।

१. प्रेरणास्वरूप शिक्षक का अध्यापन कार्य
२. वर्तन–व्यवहार
३. प्रेरित करने का तरिका
४. व्यक्तित्व

१. प्रेरणास्वरूप शिक्षक का अध्यापन कार्य

- प्रेरणास्वरूप शिक्षक की अध्यापन शैली छात्र को प्रभावित करती थी।
- अच्छे अध्यापन कार्य से अच्छा परिणाम प्राप्त होता है।
- शिक्षक का ज्ञान व्यापक प्रमाण में है।
- उनका तास बहुत अच्छा लगता है और इसलिए उनके विषय के प्रति हकारात्मक वलण है।
- शिक्षक अध्यापन कार्य के साथ पुस्तक और अध्ययन साहित्य में भी सहायभूत होते है।
- अध्यापन कार्य के साथ साथ जीवन प्रेरित वार्तालाप भी करते है।
- वर्गखंड में कमजोर और कम बोलनेवाले विद्यार्थी प्रति ज्यादा क्रियाशील रहते है।
- शिक्षक पढाई का महत्त्व सिखाते है।

२. प्रेरणास्वरूप शिक्षक का वर्तन–व्यवहार

- प्रेरणास्वरूप शिक्षक दयालु, प्रेमाल, स्नेहसागर, नम्र, कभी कभी छात्र की भलाई के लिए गुस्सा, खुशमिजाजी, शांत, उदार, सहनशील का समुच्य है। अतः प्रेरणास्वरूप शिक्षक छात्र के हितकारी है।
- प्रेरणामूर्ति शिक्षक छात्र से समभाव पूर्वक वर्तनव्यवहार, मानपूर्वक संबोधन, आत्मीयभावना, निराभिमानी, आत्मविश्वासु, महेनतु, मित्रतापूर्ण व्यवहार, स्पष्टवक्ता, शिष्टाचार, समय के आग्रही, निष्ठावान, आध्यात्मिकता का समावेश होता है।

३. प्रेरित करने का तरिका

- प्रेरित करने का प्रेरणास्वरूप शिक्षक का तरिका निराला है। उनकी मदद करने की वृत्ति, उनको देखकर शिक्षक बनने की आंतरिक प्रेरणा मिलती थी, छात्र पर किया गया विश्वास, छात्र को खुद ही समजने का स्वभाव, छात्र की समस्या का हल निकालना, छात्रा को सुदश्क प्रदान करना, छात्र की जरूरतो का ख्याल रखना, बक्षिस देना, कभी कभी प्रेम से डाँटने का तरिका भी दिल को छू जाता है।

४. प्रेरणास्वरूप शिक्षक का व्यक्तित्व

- प्रेरणास्वरूप शिक्षक का बाह्य व्यक्तित्व सामान्य है। लेकिन शिक्षक के व्यवसाय से मिलाजुला है। स्वच्छ पोशाक, सामान्य दिखाव, सही ढंग और सादगीपूर्ण है।
- प्रेरणास्वरूप शिक्षक का आंतरिक व्यक्तित्व ही उनको प्रेरणास्वरूप बनाते है। उनका ज्ञान, वर्तन व्यवहार, खूबीयाँ, आवाज, उनके व्यक्तित्व को बहुत प्रभावशाली बनाता है।

५. शैक्षणिक सूचितार्थ

- प्रेरणास्वरूप शिक्षक बनने के लिए अध्यापनशैली छात्र को प्रभावित करनेवाली होनी चाहिए। जिससे अच्छा शैक्षिक परिणाम प्राप्त होता है।
- शिक्षक का वर्तन-व्यवहार प्रेमाल, नम्र, आत्मीयतापूर्ण और समभावपूर्वक हो तो छात्र तुरंत प्रेरित होंगे।
- छात्र को प्रेरित करने के लिए सुदृढक, बक्षिस, छात्र की जरूरतो का ध्यान रखना चाहिए।
- शिक्षक का सरल बाह्य व्यक्तित्व और ज्ञान, खूबीयों, वर्तन-व्यवहार जैसा आंतरिक व्यक्तित्व छात्र को प्रेरित करने में सहायरूप होता है।
- माध्यमिक एवम् उच्च माध्यमिक कक्षा के छात्र को शिक्षक की प्रेरणा की ज्यादा जरूरत होती है।
- पुरूषजाति छात्र को स्त्री जाति शिक्षक और स्त्री जाति छात्र को पुरूष जाति शिक्षक ज्यादा प्रेरित कर सकते है।

संदर्भ

1. Best, J. W. (1986). Research in Education. (5th Ed.). New Delhi: Prentice- Hall of India Pvt. Ltd.
2. कुलश्रेष्ठ, एस. पी. (२०१०). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ : राम प्रिन्टर्स।
3. पाठक, पी.डी. (२००४). शिक्षा मनोविज्ञान. आगारा : विनोद पुस्तक मंदिर।
4. श्रीवास्तव, जी. पी. (२००२). शिक्षा मनोविज्ञान नवीन विचारधाराएँ, न्यू दिल्ही : कन्सेप्ट पब्लीसींग कंपनी।